कोंकणी साहित्य

प्रो. रवींद्रनाथ मिश्र

पुर्तगीज शासन से मुक्ति के पश्चात गोवा में कला, साहित्य और संस्कृति के समुचित विकास का उन्मुक्त द्वार खुला, जिसे भारत सरकार, गोवा सरकार और साहित्य अकादमी का भरपूर सहयोग मिला। 1961 के पूर्व पुर्तगाली शासन होने के कारण यहाँ की भाषाई जमीनी सोच–समझ को पूर्ण रूप से पनपने का अवसर नहीं मिला। ब्रिटिश शासन की भांति गोवा में पुर्तगालियों की दमन नीति भी व्यापक पैमाने पर थी। शिक्षा का प्रचार–प्रसार भी सीमित स्तर पर था। पुर्तगीज और अंग्रेजी भाषा साहित्य को विशेष महत्व दिया जाता थां। महाराष्ट्र की सीमा से लगे होने एवं पारस्परिक संबंध के कारण यहाँ की शिक्षा और संस्कृति पर मराठी भाषा और साहित्य का प्रभाव व्यापक रूप से था। कोंकणी आम जनता में बोली जाती थी। उसका साहित्य समृद्ध था लेकिन उसमें अपेक्षित वृद्धि नहीं हो सकी। उस समय कोंकणी भाषा और लिपि के कई रूप प्रचलित थे जोकि आज भी हैं। गोवा में कोंकणी देवनागरी एवं रोमन लिपियों में लिखी जाती है।

उत्तर गोवा और दक्षिण गोवा दो भागों में बँटा हुआ यह प्रांत भाषा और संस्कृति के प्रभाव की दृष्टि से भी विभाजित है। महाराष्ट्र की सीमा से लगा हुआ उत्तरी गोवा मराठी भाषा और संस्कृति से अधिक प्रभावित है। गोवा मुक्ति के इतने वर्षों बाद भी मराठी भाषा, संस्कृति का प्रभाव अब भी

यहाँ व्यापक रूप से है। कोंकणी भाषा और साहित्य अपनी जमीनी अस्मिता के कारण दिन प्रतिदिन पुष्पित एवं पल्लवित हो रहा है।

गोवा मुक्ति के पूर्व वामन रघुनाथन वर्दे वलावलकर (शणै गोंयबाब) ने कोंकणी भाषा और साहित्य के लिए ऐतिहासिक कार्य किया। इन्होंने कोंकणी की लगभग सभी विधाओं पर कार्य किया। शणै गोंयबाब को उनके विशिष्ट योगदान के कारण कोंकणी भाषा और साहित्य का जनक कहा जाता है। इनके अतिरिक्त र.वि.पंडित (कविता), वि.स. सुखठणकार (निबंध), बा.भ. बोरकार 'बाकीबाब' (कविता), लक्ष्मणराव सरदेसाय (कथा एवं ललित निबंध), शंकर भंडारी (काव्य एवं निबंध), पांडुरंग भांगी (काव्य), शंकर रामाणी (कविता) मनोहरराय सरदेसाय (कविता), रा.ना. नायक (चरित्र) रवींद्र केळेकर (ललित निबंध), चंद्रकांत केणी (कथा साहित्य एवं निबंध), नागेश करमली (कविता) चा.फ्रा. डिकोस्ता (नाटक एवं काव्य) आदि कोंकणी रचनाकारों ने भी गोवा मुक्ति के पूर्व और बाद में कोंकणी भाषा और साहित्य को समृद्ध करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। आज गोवा को आजादी मिले लगभग 50 वर्ष होने जा रहे हैं। अब यह प्रांत देश की मुख्यधारा से जुड़कर बहुमुखी विकास की दिशा में अग्रसर है।

इक्कीसवीं सदी के विगत सात वर्षों में कोंकणी भाषा और साहित्य की अभूतपूर्व प्रगति हुई है। इस संदर्भ में मैंने विगत कतिपय वर्षों के कोंकणी साहित्य पर आधारित सर्वेक्षण लेख *वार्षिकी* के लिए लिखे हैं। उनमें से अधिकांश का प्रकाशन भी हो चुका है। उन लेखों मे कोंकणी की तीन पीढ़ियों के रचनाकारों के द्वारा साहित्य की विविध विधाओं में प्रकाशित साहित्य का गहन एवं विशद वर्णन किया गया है। इसके साथ ही कोंकणी पत्र–पत्रिकाओं, पुरस्कारों, समारोहों, संगोष्ठियों, सम्मेलनों आदि का उल्लेख भी हुआ है। प्रस्तुत लेख मुख्यतः वर्ष 2008 के कोंकणी भाषा और साहित्य एवं उससे संबंधित अन्य गतिविधियों पर केंद्रित है। इसमें कोंकणी भाषा– साहित्य का विधागत विवेचन एवं विश्लेषण किया गया है।

कोंकणी काव्य

भारतीय साहित्य की भांति कोंकणी काव्य की भी एक लंबी परंपरा रही है। गोवा मुक्ति आंदोलन के दौरान राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना का

शंखनाद कोंकणी कविताओं के माध्यम से किया गया जिसका प्रभाव संपूर्ण गोवावासियों पर पड़ा। गोवा मुक्ति के बाद कोंकणी कविता प्रकृति, प्रेम, परिवेश, समाज एवं समसामयिक समस्याओं आदि से जुड़ी, लेकिन इसका जुड़ाव मंथर गति से हुआ। दरअसल कोंकणी कविता की विभिन्न प्रवृत्तियों की वास्तविक पहचान गोवा मुक्ति के बाद हुई। इसके बाद ही वह भारतीय काव्यांदोलनों से प्रभावित होती हुई प्रखरता और तेजस्विता की ओर आगे बढ़ने लगी। वैसे तो कोंकणी कविता लिखने वालों में ढेरों नाम हैं लेकिन यहाँ मैं विशेष रूप से 2008 में प्रकाशित कवियों की कविताओं का विवेचन और विश्लेषण प्रस्तुत करुँगा।

गोवा मुक्ति के बाद प्रकृति और प्रेम से लदी हुई भाव संवेदनाओं को जिन कवियों ने अपने काव्य में चित्रित किया, उनमें कोंकणी साहित्य के बहुमुखी प्रतिभा के धनी एवं साहित्य अकादमी तथा अन्य स्थानीय महत्वपूर्ण पुरस्कारों से पुरस्कृत रमेश भगवंत वेळुस्कार का नाम प्रमुख रूप से आता है। इस वर्ष प्रकाशित *दर्या* आपका सातवां कोंकणी काव्यसंग्रह है। प्रस्तुत संग्रह में कुल छोटी–बड़ी 135 कविताएँ हैं, जोकि विशेष रूप से समुद्र से संबंधित नाना विषयों को लेकर लिखी गई हैं। पानी के महत्व को इन्होंने विभिन्न संदर्भों में व्यक्त किया है। वे समुद्र की वंदना इस प्रकार करते हैं–

तुज्या अशीम
पाणयांतल्यान
पोसोभर समुद्रल्हारां घेवन
हें अर्घ्य
तुकाच ओंपता
समुद्रार्पणमस्तु
सागरार्पणमस्तु
दर्यार्पणमस्तु

कवि ने सागर के विभिन्न ऐतिहासिक, पौराणिक, सांस्कृतिक, सामाजिक आदि संदर्भों का गहन एवं विशद उल्लेख करते हुए कविताएँ लिखी हैं। कोंकणी में संभवतः यह पहला काव्यसंग्रह है, जिसमें कि सागर को केंद्र में रखकर इतनी कविताएँ लिखी हैं। वस्तुतः नदी, पहाड़, सागर, पेड़ आदि हमारी सांस्कृतिक परंपरा की विरासत हैं।

4897 CHD/10—4A

अगस्तीन खयं तुकां/एका घोंटान पिवन उडयलो
तूं ताच्या पोटांत/आदींच आसलो
हें मात ताणेत केन्ना कोणाक/सांगलें ना
आनी हेरांनीय केन्ना सांगलें ना/घडये तांकां कळळेंच नासत

रमेश वेळुस्कर की कतिपय कविताओं में शंकर, पार्वती, हिमालय, समुद्र मंथन आदि पौराणिक संदर्भों के अतिरिक्त लोक जीवन, प्रकृति एवं ऋतुओं के साथ सागर के संबंधों आदि की भाव संवेदनाएँ व्यक्त हुई हैं।

आयज हिमालयाच्या
दोंगराळ वलयां सकल
महजीं पावलां झंकारतात
तांकां तुज्या ल्हारांनी केल्लया
कातुल्यांची याद येता

साहित्य अकादमी एवं अन्य स्थानीय पुरस्कारों से सम्मानित कोंकणी कविता के दूसरे महत्वपूर्ण हस्ताक्षर प्रकाश दामोदर पाडगाँवकर का *ब्रह्मांड–योगी चिरंतनाचो* नामक सातवां काव्यसंग्रह (2008) प्रकाशित हुआ। रमेश वेळुस्कार की काव्यसंवेदना से अलग हटकर प्रकाश की कविताएँ मूलतः आध्यात्मिक चेतना, जीवन–जगत की क्षणभंगुरता, असतो मा सद गमय.. आदि विचारधाराओं से संवेदित हैं। जैसे कि–

एकाच जल्मान दिसता देवा
कितलेशेच जल्म जियेलों
तुचीज कृपा आसली देखनू
हांव खंयच्यान खंय पावलों

प्रस्तुत काव्यसंग्रह में कुल 71 कविताएँ हैं। कोंकणी साहित्य का सर्जन कर उसको मान–सम्मान और अस्मिता दिलाने हेतु शणै गोंयबाब ने एक ऐतिहासिक कार्य किया है। आज वे कोंकणी काव्यजगत के स्तुत्य एवं प्रेरणास्रोत हैं। प्रकाश पाडगांवकर का उनके प्रति यह भावोद्‌गार कथन की प्रामाणिकता को सिद्‌ध करता है।

शणै आयज पळय तुज्या सांगाताक
आमचे हात गर्वान मुठी करून

4897 CHD/10—4B

आनी आंगठे उबे आत्मनिर्भर शिटूक
पेलून कसलेंय आव्हान
दवरूंक गिन्यानाच्या साणीर सुगूर
आमकां आत्मसन्मान मेळोवन दिवपी
तुवें शिंपून भरभराटीक हाडिल्लो कोंकणी संवसार

कोंकणी कविता के तीसरे महत्वपूर्ण कवि सु.म. तडकोड के दूसरे पांयजेल यानी (तस्वीर का ढाँचा) काव्यसंग्रह की कविताएँ सामाजिक जीवन के विभिन्न पहलुओं से जुड़ी हुई हैं जिनमें परिवर्तित समाज में बिखरते एवं टूटते हुए नैतिक मूल्यों के पतन को दर्शाया गया है। इस बात को लेकर कवि बहुत आहत है, फिर भी आशान्वित है–

म्हळें,
म्हजीय एक फायल आसूं येता..
...गावलीय ती आशीकुशीतली.
उक्ती करून पळयली जाल्यार वाचूंक मेळळे–
–तुर्जे कर्तुप म्हळयार फुफक्या मनशान
केल्ली
संघर्षरत कवितेची निर्मणी...

कवि का मानना है, प्रत्येक व्यक्ति का चरित्र किसी न किसी रूप में उसके मानस पटल पर अंकित होता है। किंतु उसे हम समझ नहीं सकते। मानव जीवन का तात्पर्य संघर्षरत होना है, जहाँ कविता की सर्जना होती है। सुं.म. तडकोड के बाद प्रा. बाळकृष्ण कानोळकर को कोंकणी कवि और समीक्षक के रूप में जाना जाता है। कानोळकार के *आदिमायेचे उले* (आदमी की आवाज) काव्यसंग्रह में कुल 38 कविताएँ हैं, जिन्हें उलो : पयलो से उलो:चवथो के अंतर्गत रखा गया है। ये कविताएँ मूलतः गोवा की मिट्टी एवं लोकसंस्कृति, प्रेम–शृंगार, रोमानी भावों, सामाजिक एवं व्यक्तिगत जीवन को केंद्र में रखकर लिखी गई हैं।

मायझंयां, कविता करतसय?
आज्यापणज्यान तरी तुज्या
केल्ली काय रे कॅवां कविता?
म्हुणानच मियां करतंय!

बापायसकट आज्यापणज्याक
खापर–खापरपणज्याक, शेणज्याक
'शीरी' ची गाण फोडुंक
येय नस्ली.... म्हाकां चंता।

कथाकार, कवि एवं संपादक तुकाराम रामा शेट कोंकणी भाषा और साहित्य को समृद्ध करने में अहम भूमिका निभा रहे हैं। वर्ष 2008 में प्रकाशित उनके *मनमळव* काव्यसंग्रह में विभिन्न विषयों से संबंधित कविताएँ संकलित हैं। *सांवली* नामक कविता में अभिव्यक्त श्रमशील नारी का सौंदर्य इस प्रकार है–

सकाळी उठून सांवली
हळू हळू पावलांनी
चलत लागता....

.....

हळू लांब लांब चलत सांजवेळा
घोटेरांत झाडां झाडांतल्या
पावल दवरता
पदर वोडून सांवळी
काळी काळी रात
जावन येता....

कोंकणी कविता के युवा कवि सुदेश शरद लोटलीकर ने 1990 से काव्य लेखन की शुरुआत की। अभी तक उनके दो मराठी और दो कोंकणी काव्यसंग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। कवि को स्थानीय कोंकणी एवं अन्य कला संस्थाओं द्वारा कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। *एकांताचीं उतरां* 2008 में प्रकाशित उनका दूसरा काव्यसंग्रह है। इसमें उन्होंने जीवन–जगत के विभिन्न विषयों को स्पर्श किया है। सुख–दुःख मानव जीवन के साथ चिरकाल से जुड़ा हुआ है।

दुख्खाचे हुनसाणेर/सुखाची साय
जिणेचो पेलो/ओठांक लाय....
एकांत/सुखाचें देणें
एकटेपण/एक दुखणें...

सुदेश लोटलीकर के अतिरिक्त दूसरे युवा कवि संजीव वेरेंकर बालगीत के लिए जाने जाते हैं। अभी तक उनके तीन कविता संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। *पडवेवयलीं संवणी* (2008) चौथा बालगीत संग्रह है। यह मूलतः पशु–पक्षियों और जानवरों पर आधारित है।

म्यांव म्यांव म्यांव
बिलूबाए आमचें
खुबूच बाए मस्तें
दूदू खांवक ल्हेवटें

संपादक, प्रा. भालचंद्र गांवकर ने गोवा के वरिष्ठ एवं युवा कुल 25 कवियों की प्रमुख कविताओं का एक काव्यसंकलन *काव्यफुलां* नाम से प्रकाशित किया, जिनमें नागेश करमली, माधव बोरकर, रमेश वेळुस्कार, शंकर रामाणी, प्रकाश पाडगांवकार, जेस फेर्नांदीश, गजानन रायकर, जे.बी. सिक्केरा, युसुफ शेख, आनंद वटीं, माया खरंगटे, नूतन साखरदांडे, निलवा अ.खांडेकर, राजय पवार, पुर्णानंद च्यारी, हनुमंत चोपडेकर आदि हैं।

गोवा में आज भी क्रिस्ती समाज द्वारा कोंकणी साहित्य रोमन लिपि में लिखा जा रहा है। रोमन लिपि को शिक्षा एवं राजकाज की भाषा बनाने पर जोर दिया जा रहा है। वालतर मेनेझेज (Walter Menezes) का रोमन लिपि में ज्वाइट अनी हर कोविता (ZOIT ani her kovita) नामक 61 पृष्ठों का काव्यसंग्रह प्रकाशित हुआ। *काल राती* कविता की कतिपय पंक्तियों द्रष्टव्य हैं–

Kal rati--
Foddli hanvem kott's tti hoji
Hanv bhikari nhoi
Naka mhaka bhik tumchi

काव्य लेखन की दिशा में कोंकणी कविता विभिन्न काव्य प्रवृत्तियों को आत्मसात कर भारतीय भाषाओं की मुख्यधारा से जुड़कर आगे बढ़ने का प्रयास कर रही है। सूर्या अशोक ने अपनी *अमृतवाणी* नामक रचना में नामदेव, ज्ञानदेव, कबीर, सूरदास, एकनाथ, तुलसीदास, पूंतानम नंपूतिरी, रहीम, तुकाराम की वाणियों का कोंकणी भाषा में अनुवाद कर संकलित किया है। ब्राजिन्हों सोरेस कालापुरकार ने *मोतियां* में विविध प्रसंगों पर

आधारित अपने मनोभावों को दोहों और शेर के माध्यम से रोमनलिपि में व्यक्त किया है।

Ful fulon aplo aroll ani sobitai dita
Vat apunn koddon dusreak uzvadd haddta.

कथा साहित्य

कोंकणी कथा साहित्य को समृद्ध एवं लोकप्रिय बनाने में चंद्रकांत केणी, पुंडलीक ना. नायक, दामोदर मावजो, महाबलेश्वर सैल, उदय भेम्रे, एन.शिवदास, हेमा नायक, जयंती नायक, मीना काकोडकर, भिकाजी घाणेकर आदि का नाम प्रमुख रूप से लिया जाता है। इस वर्ष उदय शेणवी के *घारू* और *मूळनक्षत्र* नामक दो उपन्यास प्रकाशित हुए जोकि घर–गृहस्थी के जीवन पर आधारित हैं। भिकाजी घाणेकर का *भलायकी एक गिरेस्तकाय* नाम से 100 कहानियों का कथासंग्रह प्रकाशित हुआ। इसमें भुरग्यांची भलायकी, कंप्यूटर, टी.वी., 'फास्ट फूड' करता, शास्त्रीय संगीत, प्राण वायु, भुरग्यांचे दांत, कुटुंब कल्याण, बर्ड फ्लू वासीन, बायलांक बरी खबर, सोयाबीन, टी.बी.चीं वखदा आदि विभिन्न विषयों पर छोटी–छोटी कहानियाँ संकलित हैं। रा.ग. गावडे का दया माया, अश्वत्थ, लज, बांयतलो, गर्व, देडशाणो, नीत, गुलाम, बोकडेकार, भेसड शीर्षक से कुल दस कहानियों का *युवा कथा* नामक कथासंग्रह प्रकाशित हुआ। ये कहानियाँ मूलतः नीति, धर्म, त्याग, बलिदान आदि मानवीय मूल्यों से प्रेरित बच्चों और युवाओं को ध्यान में रखकर लिखी गई हैं। कतिपय कहानियों में अमानवीय पक्षों की निंदा की गई है।

आज भूमंडलीकरण के दौर में एक प्रकार की वैश्विक संस्कृति का निर्माण हो रहा है, जिसमें अनुवाद का महत्व दिन–प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। साहित्य अकादमी जैसी कई संस्थाएँ एक भाषा के साहित्य को दूसरी भाषा में लाने का कार्य कर रही हैं। गोवा कोंकणी अकादमी भी इस दिशा में अच्छा कार्य कर रही है। कोंकणी कथाकार नरेंद्र कामत ने बांग्ला के प्रसिद्ध उपन्यासकार शरतचंद्र चटर्जी के *मद्दली भयण* (मझली बहन), *अबुद्धी* और *बिंदूलो बाबू* नामक तीन उपन्यासों का अनुवाद कोंकणी भाषा में किया है। रमेश घ. लाड ने मूल कन्नड लेखक कस्तूरी मोहन पइ के

कन्नड उपन्यास *ध्रुवतारे* का कोंकणी मे अनुवाद कर प्रकाशित किया है। कामिलो एफ मेनेझेज की आठ कहानियों का "Noxibant Nirmilelem" Kothajhelo नाम से मूल संग्रह रोमन लिपि में आया है। गोवा की जानी–मानी लोक कथाकार जयंती नायक की *वेनचिक लोक कहानियाँ* (Venchik Lok-Kannio) का अनुवाद फेलिसियो कारडोज (Felicio Cardozo) ने रोमन लिपि में किया है।

नाट्य साहित्य

गोवा नाटक की भूमि है। यहाँ आज भी कोंकणी और मराठी की नाट्य स्पर्धाएँ वर्ष में एक बार जरूर की जाती हैं जिसमें सूपंर्ण गोवा के विभिन्न ग्रामांचलों से नाट्य मंडलियाँ भाग लेती हैं। ये नाट्य प्रतियोगिताएँ बड़े व्यापक स्तर पर की जाती हैं। इस वर्ष वसंत पांडुरंग नाडकर्णी का रामायण की कथा पर आधारित *कांचनमृग.....कांचनमृग* नामक तीन अंकों का नाटक प्रकाशित हुआ। इसके पूर्व इनके चार नाटक प्रकाशित हो चुके हैं। डॉ. चंद्रशेखर शेणइ ने इसका प्रथम मंचन 30 नवंबर 2003 को डॉ. भालेराव नाट्यगृह, साहित्य संघ, गिरगाँव में बड़ी कुशलता से किया। नरेंद्र का. कामत का तीन अंकों का *संगीत कोंकणी नाटक वाकडे म्हेडीक वाकडें नेम* नामक गाँव के भाटकार जीवन से संबंधित आया। *आडकात्रिंतुलें फोप्पळ* शीर्षक से होसाड बाबुटि नायक का नाटक प्रकाशित हुआ।

युवा नाटककार एवं कवि प्रो. राजय पवार का *डरने का नाय* चौथा नाटक है। यह मूलतः हास्यप्रधान विनोदी नाटक है जिसमें एक परिवार के अंतर्गत पति को डरपोक, भीरू और पत्नी को सबला और हिम्मती दिखाया गया है। धिरू अपने घर में चोरी करने वाले चोर के प्रति हमदर्दी व्यक्त करता है, जिससे चोर का हृदय परिवर्तन हो जाता है। इसी क्रम में बाबा प्रसाद के दो अंकों का विनोदी नाटक *मेलो उल्लो एकूच* और *दो बरात पयशे* आया। ये दोनों नाटक मनोरंजन पूर्ण हैं। दूसरा मनोरंजन पूर्ण दो अंकों का (28 मार्च 2007 को मंचित) नारी विषयक नाटक *आत्या, आत्या सून कर* महेश चंद्रकांत नाईक का आया।

गोवा में तियात्र की एक लंबी परंपरा रही है। समय–समय पर यहाँ

तियात्र खेले जाते हैं और तियात्र पर बहुत सारे ग्रंथ प्रकाशित हुए हैं। उनमें से Boroupi Menino Mario Araujo का Lok Nit, Tiatra pustok Rupan और CEZAR D' MELLO का Kalliz Ostorechem नामक तियात्र रोमन लिपि में प्रमुख है। तियात्र के जाने–माने लेखक मिनीन मारियो आरावजो की आठ पुस्तकें तियात्र पर प्रकाशित हो चुकी हैं। हेर गाजलेले तियात्र के अंतर्गत *भाड्याचो कुसवो* सात अंकों का दूसरा तियात्र है। इसके अतिरिक्त *तरसाद, आत्म–धन, लोकगीत, एयर होस्टेज* आदि हैं।

गोवा में रमेश भगवंत वेळुस्कार का नाम प्रमुख रूप से कवि के रूप में जाना जाता है, लेकिन वे एक अच्छे कथाकार, नाटककार और अनुवादक भी हैं। वेळुस्कार को कोंकणी के अतिरिक्त हिंदी एवं अन्य भाषाओं की अच्छी जानकारी है। वे हिंदी भाषा में काफी रुचि रखते हैं। इन्होंने धर्मवीर भारती के *अंधायुग* का कोंकणी में अनुवाद कर उसका सफल मंचन भी किया है। वर्ष 2008 में वेळुस्कार ने *महाभारत* की कथा पर आधारित संस्कृत नाटककार भास के *उरुभंग* और भारतेंदु हरिश्चंद्र के प्रसिद्ध नाटक *अंधेर नगरी* का कोंकणी में अनुवाद किया है। इसके अतिरिक्त उन्होंने श्री अरविंद के अंग्रेजी नाटक *एरीक* का अनुवाद कोंकणी भाषा में किया है।

निबंध एवं समीक्षा साहित्य

गोवा में कोंकणी निबंधकार के रूप में साहित्य अकादमी एवं ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त रवींद्र केळेकर का नाम बड़े आदर के साथ लिया जाता है। विद्या पई ने केळेकर के 42 कोंकणी निबंधों का अंग्रेजी में अनुवाद Kaleidscope नाम से किया। साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त लोक कथाकार, अनुवादक जयंती नायक के दो कथासंग्रह, बारह लोकवेद एवं छह बालसाहित्य की पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। इसके अतिरिक्त ढेरों लेख विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। अभी वे निरंतर सृजनरत हैं। इस वर्ष उनकी *लोकरंग* एवं *लोकमंथन* नाम से लोकवेद निबंधसंग्रह की दो पुस्तकें प्रकाशित हुईं। प्रथम संग्रह में लोकजीवन की संस्कृति पर आधारित कुल दस निबंध हैं। दूसरी पुस्तक में लोकवेद से संबंधित कुल आठ निबंध हैं। उन्होंने इसमें गोवा के सामाजिक, सांस्कृतिक

एवं पारिवारिक जीवन का गहन अध्ययन एवं मंथन किया है। जयंती नायक के *गर्जन* और साहित्य अकादमी से पुरस्कृत *अथांक* कथा साहित्य पर गोवा के प्रमुख रचनाकारों ने अपनी समीक्षाएँ लिखी हैं। इन समीक्षाओं का संकलन और संपादन अवधूत आमोणकार ने *जयंती कथा आस्वाद आनी समिक्षा* नामक पुस्तक में किया है। इस वर्ष बालकृष्ण कानोळकर की *क्षःसमिक्षेंतलो* की समीक्षा पुस्तक प्रकाशित हुई। इसमें मूलतः कोंकणी रचनाकारों, समीक्षकों की महत्वपूर्ण कृतियों का परीक्षण उनकी अनुभूति और अभिव्यक्ति को ध्यान में रखकर किया गया है।

अन्य साहित्य

कोंकणी साहित्य की अन्य विधाओं में कई रचनाकारों ने कोंकणी, मलयालम, कन्नड एवं अन्य भाषाओं के महत्वपूर्ण रचनाकारों की जीवनियाँ लिखी हैं। श्रीनिवास कामत ने कोंकणी भाषा और साहित्य के जनक वामन रघुनाथ वर्दे वलावलीकर यानी शणै गोंयबाब के जीवन, साहित्य एवं उनके कार्य के विषय में कोंकणी से अनुवादित अंग्रेजी में Shenai Goembab, The man and his work और For the Konkani students (Konkani Vidhyarthyank) नामक दो पुस्तकें प्रकाशित की हैं। एल. सुनीता बाई ने कन्नड भाषा के प्रथम राष्ट्रकवि गोविंद पइ के जीवन और साहित्य को कन्नड से कोंकणी में अनूदित कर *महाकवि गोविंद पइ* नाम से प्रकाशित किया है। कन्नड की जिस पुस्तक का अनुवाद सुनीता ने कोंकणी में किया, उसके मूल लेखक कय्यार किंअण्णा रइ हैं।

मानव जीवन का संगीत से बहुत गहरा संबंध है। इसके अंतर्गत गीत, नृत्य, वादय तीनों का समावेश होता है। भारत जैसे विशाल देश में हर प्रांत का अपना लोकसंगीत होता है। संगीत में वादय यंत्रों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है, जिससे कि संगीत अपनी पूर्णता को प्राप्त करता है। वादय यंत्रों में तबला एक विशिष्ट वादययंत्र है। कोंकणी संगीतकार श्रीधर बर्वे ने *तबले* नामक 213 पृष्ठों की पुस्तक के माध्यम से तबले के विभिन्न स्वरूपों की विस्तृत एवं गहन जानकारी दी है।

संगीत के साथ–साथ मनुष्य जीवन के लिए भक्ति का भी सर्वोपरि महत्व है। भक्ति के द्वारा हमारे चित्त का परिमार्जन होता है। वह मानवीय

बुराइयों को दूर कर हमारे जीवन को सुसंस्कृत, सुव्यवस्थित एवं सुसंगठित बनाती है। गणपती ल.दांडेकर ने *श्रीनारदभक्तिसूत्राणि* का *श्रीनारदाचीं भक्तिसूत्रां* नाम से कोंकणी में अनुवाद किया है। प्रस्तुत पुस्तक का पहला, दूसरा, तीसरा, चौथा एवं पांचवाँ अध्याय क्रमशः भक्तिचें महत्व, भक्तिची परिभाषा–वळख, भक्ति साधपाची सधनां, शुद्ध आनी संमिश्र भक्ति, सिद्धिचो लाभ शीर्षक में विभाजित है।

संगीत, भक्ति के साथ जीवन में चिकित्सा का महत्वपूर्ण स्थान है। संसार में सभी धर्म शरीर के लिए हैं। डॉ. उमानाथ रातावोली ने *स्टेथोस्कोप* (वैजिकी) नाम से कोंकणी में पुस्तक लिखी है। इस पुस्तक के पहले से छठे अध्याय के शीर्षक क्रमशः वैजिकी सोद, आहार–अन्न–पोषण, वखदा आनी उपाय, बरी भलायकी, व्याधी आनी अनारोग्य और सरभरस हैं। मानव जीवन को स्वस्थ बनाए रखने के लिए इसमें नाना प्रकार के सुझाव दिए गए हैं। वैद्यिकी पर दूसरी पुस्तक अनुपमा कुडचडकर की *कांत कातीची जतनाय आनी दुयेंसां* नाम से आई, जिसमें विभिन्न रोगों एवं उनके उपचार की जानकारी दी गई है।

पत्र-पत्रिकाएँ

गोवा सूचना, तकनीकी और मीडिया विस्फोट के युग में निरंतर आगे बढ़ रहा है। पर्यटक स्थल होने के कारण यहाँ विभिन्न भाषा–भाषी लोग रहते हैं। अंग्रेजी और मराठी भाषा का प्रभाव होने के कारण गोवा में इन भाषाओं में दैनिक पत्रों की संख्या अधिक है। अभी भी गोवा से एक मात्र दैनिक *सुनापरांत* पणजी से प्रकाशित होता है। कोंकणी पत्रिकाओं में *जाग* (मासिक) संपादक प्रा. माधवी सरदेसाय का विशिष्ट स्थान है। यह विगत 35 वर्षों से कोंकणी भाषा और साहित्य के संवर्धन की दिशा में स्तुत्य कार्य कर रही है। इसमें कोंकणी की कहानी, कविता, विभिन्न विधाओं पर समीक्षा लेख एवं विशेषांक प्रकाशित होते रहते हैं। कोंकणी की दूसरी मासिक पत्रिका *बिंब* का प्रकाशन दिलीप बोरकर के संपादकत्व में विगत आठ वर्षों से हो रहा है। यह भी कोंकणी की विभिन्न विधाओं एवं अन्य समसामयिक प्रसंगों पर आधारित है। गोकुलदास प्रभु के संपादन में *ऋतु* नामक कोंकणी कविता की त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन सफलतापूर्वक किया जा रहा है।

स्वर्गीय चंद्रकांत केणी के संपादकत्व में *कुळागर* नाम की त्रैमासिक पत्रिका 25 वर्षों से निकल रही थी। अभी उसके संपादन का भार दिनेश मणेरीकर निभा रहे हैं। संपादक तुकाराम शेट *कोंकण टायम्स* नाम की त्रैमासिक पत्रिका का संपादन कर रहे हैं। इस पत्रिका का प्रकाशन विगत 30 वर्षों से हो रहा है। यह विभिन्न विधाओं की पत्रिका है। रोमन लिपि में फायस्टो डि–कोस्टा के संपादन में *गुलाब* नाम की प्रसिद्ध मासिक पत्रिका प्रकाशित हो रही है। इसका प्रकाशन पिछले 27 वर्षों से हो रहा है। इनके अतिरिक्त *जैत, शोध, उर्बा, बारदेश, चवथ* आदि अन्य कोंकणी की पत्रिकाएँ प्रकाशित हो रही हैं। इन पत्रिकाओं में कोंकणी भाषा और साहित्य के अतिरिक्त यहाँ की राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक परिवेशगत हलचलों की अनुगूँज भी समाहित होती है। गोवा के अतिरिक्त कर्नाटक और केरल से भी कोंकणी की अन्य लिपियों में भी पत्रिकाएँ निकल रही हैं। गोवा कोंकणी अकादमी, कोंकणी भाषा मंडल, मडगाँव और राजीव कला मंदिर फोंडा ने 10–11 फरवरी, 2007 को आठवां युवा साहित्य सम्मेलन आयोजित किया। इस सम्मेलन में कोंकणी की विभिन्न विधाओं में जिन युवा लेखकों ने पुरस्कार प्राप्त किया, उनकी रचनाओं को संकलित कर सम्मेलन की विस्तृत रपट सहित प्रा. हनुमंत चोपडेकर ने *युवांकुर–2008* शीर्षक से प्रकाशित किया।

पुरस्कार : गोवा के वयोवृद्ध कोंकणी साहित्यकार, मनीषी, चिंतक श्री रवींद्रबाब केळेकर को उनके संपूर्ण साहित्यिक योगदान के लिए वर्ष 2008 में ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया। वैसे तो उन्हें साहित्य अकादमी के अतिरिक्त कई अन्य स्थानीय एवं राष्ट्रीय पुरस्कारों से विभूषित किया जा चुका है लेकिन गोवा में ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त करने वाले श्री रवींद्रबाब पहले कोंकणी रचनाकार हैं, जिन्हें यह गौरव प्राप्त हुआ है।

श्री अशोक कामत को वर्ष 2008 का साहित्य अकादमी पुरस्कार उनके *घणाघाय नियतीचे* उपन्यास के लिए दिया गया। साहित्य अकादमी का अनुवाद पुरस्कार एन.पुरुषोत्तम मल्या कोच्चि को उनकी *तिरुकुरळ* मलयालम रचना के कोंकणी में अनुवाद के लिए मिला। इस वर्ष गोवा कला अकादमी का साहित्य पुरस्कार तुकाराम शेट को तथा गोमंत शारदा पुरस्कार लंबर्ट मास्कारेहंस को प्रदान किया गया।

वस्तुतः गोवा कोंकणी अकादमी के द्वारा कोंकणी भाषा और साहित्य के विकास के लिए पूरे वर्ष अपनी विभिन्न योजनाओं के अंतर्गत विविध कार्यक्रमों के आयोजन किए जाते हैं, जैसे कि कोंकणी की प्रथम पुस्तक के प्रकाशन हेतु 75% सहयोग राशि एवं उसके बाद की पुस्तक के लिए 50% सहयोग राशि तथा पुनर्मुद्रित पुस्तक हेतु अनुदान धनराशि का योगदान। प्रकाशकों को प्रोत्साहित करने के लिए कोंकणी पुस्तकों की खरीदारी। इस योजना के अंतर्गत अकादमी ने लगभग 40 पुस्तकों की 50 अथवा 100 प्रतियाँ खरीदीं। अकादमी ने *कोंकणी शब्दसागर* के आठ खंडों का निर्माण किया जिसमें रोमी–कोंकणी, विज्ञान/तकनीकी शब्दावली कोश का भी समावेश है। कोंकणी अकादमी संपूर्ण गोवा में स्थित विभिन्न शिक्षा संस्थाओं एवं अन्य संस्थाओं को कोंकणी भाषा, साहित्य और शिक्षण की दिशा में सराहनीय कार्य के लिए पुरस्कृत करती है। अकादमी स्नातक, स्नातकोत्तर एवं पी.एच.डी छात्रों को उनके अध्ययन के लिए छात्रवृत्ति भी देती है। संस्था बालसाहित्य एवं कोंकणी में अनूदित पुस्तकों के प्रकाशन के लिए अनुदान प्रदान करती है। अकादमी ने 22 जनवरी 2008 से 26 जनवरी 2008 तक कोंकणी नाटक महोत्सव का आयोजन किया, जिसमें चार कोंकणी नाटक और एक तियात्र को प्रमाण–पत्र द्वारा सम्मानित किया गया। कोंकणी तियात्र पुस्तक के प्रकाशन हेतु अकादमी 75% आर्थिक अनुदान देती है। 16–17 फरवरी 2008 को अकादमी ने पिलार महाविद्यालय में युवा कोंकणी साहित्य सम्मेलन का आयोजन किया। कोंकणी अकादमी उक्त कार्यक्रमों के अतिरिक्त विभिन्न संस्थाओं के सहयोग से संगोष्ठियों, पुस्तक प्रदर्शनियों, कोंकणी राष्ट्रमान्यता दिवस, कोंकणी राजभाषा दिवस आदि का आयोजन करती रहती है।

❑❑❑